KISSAN

BY CHANDRA PRABHAKAR

ज्ञानामृत

- चित्त से किसी प्रकार का सम्बन्धा न रहने पर स्वरूप में अवस्थित हो जाने का नाम कैवल्य है। जब मन में इच्छित सब इच्छाओं को त्याग देता है। आत्मा से आत्मा में संतुष्ट हुआ 'स्वरूपस्थिति' को प्राप्त हुआ, 'स्थिति-प्रज्ञ' कहा जाता है।

- सामर्थ्यानुसार उचित प्रयत्न के पश्चात जो ाल मिले अथवा जिस अवस्था में रहना हो, उसमें प्रसन्नचित बने रहना और सब प्रकार की तृष्णा छोड़ देने का नाम सन्तोष है।

- मनुष्य खोज करता है एक बात की कि वह जगह आ जाये जीवन में जहाँ कोई और दौड़ न रहे, पाने को शेष न रहे। जब तक पाने को शेष है आनन्द असम्भव है। जीवन को जो जितना सजग हो कर देखेगा, उतनी ही उसकी वासना क्षीण होती है। विराग का जन्म होता है।

- साहस का मतलब जो अज्ञात है उसके लिये चेष्टा। जो जान लिया, उसे छोड़े। जो हम जानते हैं वह संसार है। जो नहीं जानते वह ही परमात्मा है।

- विराग के बाद भी दुख बने रहते हैं तो समझो चूक गये। विरागी को दुख नहीं होना चाहिये।

- जैसे ही आदमी ने माँगा कि वह माया के जगत में प्रवेश कर गया। मांगना बन्द कर दिया माया के बाहर हो गया।

- जिसे धयान चाहिये, उसे विचारों से तादाम्य तोड़ना है। उसे धाीरे धाीरे कहना बन्द करना चाहिये कि ये विचार मेरे है। धयान के अतिरिक्त आपका कुछ नहीं है। चैतन्य से संबन्धा, विचार से संबंधा विच्छेद।

- जब भी अस्तित्व के सामने अपनी चाह रखते हैं तभी आप उसके विपरीत हो जाते हैं। अस्तित्व की मर्जी के खिलाफ़ आप जो भी करेगे उसमें हारेंगे और टूटेगे। आस्तिकता का अर्थ है सर्व स्वीकार भाव।

- एक भी विचार न होगा। छायारहित मन में वह घटना घटती है जिसको हम ब्रह्मज्ञान कहते हैं।

- तितिक्षा का अर्थ है : अब तुझे दुख और सुख समान है। इसका मतलब यह नहीं कि अब सुख का पता नहीं चलेगा, दुख का पता नहीं चलेगा। अगर बु) के पैर में भी कांटा चुभाइये तो दर्द का पता चलेगा। कांटा गड़ेगा तो कष्ट होगा, दुख नहीं होगा। कष्ट बाहरी घटना है, दुख उसकी व्याख्या है। मस्तिक व्याख्या नहीं करेगा। ना ही परमात्मा से शिकायत करेगा काटा क्यों गड़ा। वह स्वीकार कर लेगा। मर्जी अस्तित्व की।

- जगत के सभी पदार्थ तभी तक मनोहर प्रतीत होते है जब तक कि उनके स्वरूप पर सम्यक् विचार नहीं किया जाता। विचार करने पर उनकी सत्ता सि) नहीं होती। अतः वे जार्ण शीर्ण हो कर न जाने कहाँ विलीन हो जाते है।

- इस जड़ दृश्य जगत का चिन्तन ही जन्मरूप अनन्त दुख का हेतु है। दृश्य चिन्तन से रहित हो कर सच्चिदानन्द परमात्मा में स्थित रहना ही पुनर्जन्म रहित अक्षय सुख का हेतु है।

- 'यह मुझे मिल जाये' यह जो संकल्प रूप इच्छा है। बस यही संसार है। तथा इसका शान्त हो जाना ही मोक्ष है।

- संसार के स्मरण के अभाव को ही स्वभाविक 'चित्त-विनाश स्वरूप योग' कहते हैं। और वह अक्षय योग शान्तरूप से नित्य स्थित है।

- जब तक मन आत्मा के द्वारा आत्मा में सन्तुष्ट नहीं हो जाता तब तक आपत्तियाँ उद्भूत होती रहती हैं। जैसे मलिन दर्पण में मुख की छाया नहीं दीखती उसी प्रकार आशा की परवशता से व्याकुल एवं सन्तोषरहित चित्त में ज्ञान का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता।

- दृश्य बन्धान है। यदि दृश्यरूप दुख सत हो तो उसकी शान्ति कभी नहीं हो सकती और दृश्य की शान्ति न होने पर ज्ञाता में कैवल्य द्धमोक्षऋ की सि) नहीं हो सकती।

- द्रष्टा से दृश्य की पृथक सत्ता न होने के कारण दृश्य का अभाव हो जाने पर जो द्रष्टा में बलात् द्रष्टापन का अभाव प्राप्त होता है, उसी को तुम असत् द्धमिथ्या दृश्यऋ के बाधित होने से सन्मात्र चिन्मयरूप में अवशिष्ट हुए आत्मा का केवली भाव द्धया कैवल्यऋ समझो।

- पुरूष जिस जिस वस्तु की ओर से विरक्त होता है उस उससे मुक्त होता जाता है। जो देह आदि में अहंभाव का अनुभव नहीं करता। ऐसा कौन मनुष्य जन्म मरण रूपी भ्रम को प्राप्त होगा?

- वासना युक्त अज्ञानी चित्त को जहाँ भय नहीं होता वहाँ भी भय दिखाई पड़ता है।

- अप्राप्त भोगों की स्वभावत: कभी इच्छा न होना और दैवात, प्राप्त हुए भोगों को यथायोग्य व्यवहार में लाना। जिनका मन पूर्ण आत्मा में ही संलग्न है, उन ज्ञानियों की दृष्टि से तो वस्तुत: संसार में मोक्ष नही है।

- जिसके हृदय में अभिमान का अत्यन्त अभाव हो गया है, ऐसा विशु) अन्त:करण वाला ज्ञानी महात्मा धयान, समाधि अथवा कर्म करे या न करे सदा मुक्त ही है। क्योंकि जिसका मन सर्वथा वासना रहित हो गया है, उसे न तो कर्मो के त्याग से कोई प्रयोजन है और न कर्मों के अनुष्ठान से। जप, धयान, समाधि से भी उसका कोई प्रयोजन नहीं है। सम्पूर्ण वासनाओं से रहित हुए सच्चिदानन्द परमात्मा के निरन्तर मननरूप मौन से बढ़कर दूसरा कोई उत्तम पद नहीं है। ज्ञानी महात्मा के लिये कोई कर्तव्य नहीं है।

- एक ही विषय को ग्रहण करने वाले चित्त को प्रत्यर्थनियत कहते है। वही आत्मा है।

- वास्तव में न कोई किसी को सुख दे सकता है न दुख। जो मिलना है वह अवश्य मिलेगा। मनुष्य दूसरों को सुख दुख पहुँचाने की नीयत से कर्म करके अपने अन्दर सुख दुख पाने के कर्माशय एकत्र कर लेता है।

- भूतकाल व्यतीत हो गया, इसलिये त्यागने योग्य नहीं। वर्तमान भोगा जा रहा है, दूसरे क्षण स्वयं समाप्त हो जायेगा। इसलिये आने बाला दुख त्यागने योग्य है। विवेकीजन उसी को हटाने की चेष्टा करते है।

- दुख का हेतु तृष्णा है। संकल्प करके मनुष्य दुख में डूब जाता है और कुछ भी संकल्प न करके वह अविनाशी सुख पाता है।

- सत्य का साक्षात्कार वही व्यक्ति कर सकता है जो अक्रिया का मूल्य जानता हो। क्रिया सामाजिक अथवा व्यावहारिक उपयोगता है। वह इन्द्रियातीत चेतना के विकास में एक बाधाा है। अकर्म वीर्य की साधाना करने बाला ही अतीन्द्रिय ज्ञानी हो सकता है।

- धार्म है जीते जी स्वयं को अस्तित्व में विलीन करने की कला। यदि परमात्मास्वरूप यथार्थ वस्तु न हो तो भले ही अवस्तुरूप संसार का अनुसरण करे, परन्तु जो यथार्थ वस्तु का द्धपरमात्मा काऋ परित्याग करके अवस्तु रूप संसार का अनुगमन करता है वह नष्ट हो जाता है। परमात्मा की प्राप्तिरूप पुरूषार्थ से वंचित रह जाता है।

- वासना दो प्रकार की होती है। मलिन वासना एवं शु) वासना। जो केवल शरीर धाारण के लिये हेाती है वह शु) वासना है। परमात्मा तत्व को जानने वाले वे जीवन मुक्त कहलाते है।

ठीक समय पर किया हुआ थोड़ा सा भी कार्य बहुत उपकारी होता है और समय बीतने पर किया हुआ महान उपकारी भी व्यर्थ हो जाता

है।

तभी तक आपत्तियाँ दुर्बल एवं तुच्छ हो कर दूर ही रहती है जब तक कि मोह को ैलने का अवसर नहीं दिया जाता।

जो दृश्य वस्तु की ओर दृष्टिपात नहीं करता, वह मुक्त है। और कुछ पाना या जानना शेष रह गया है, भ्रम है।

जो चित्त को जीतकर उसके प्रभाव से रहित हो गया है, वह बिना किसी प्रयास के परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

आनन्दमय हो तो इच्छायें कैसे आ सकती है? यदि इच्छायें हैं तेा तुम इस क्षण में आनन्दमय कैसे हो सकते हो, इच्छा यानी भविष्य। आनन्द वर्तमान में है।

आदि और अन्त में जिसकी सत्ता नहीं है, ऐसी मिथ्या वस्तु में जिनका मन आसक्त होता है, उस मूढ़ पशुतुल्य जन्तु के हृदय में किस प्रकार विवेक पैदा किया जा सकता है।

'मैं कुछ नहीं करता' इस तरह के संकल्प से पुरूष्प का कर्त्तव्य निवृत हो जाता है, उसी प्रकार जीवात्मा में प्रतीत होने वाला द्वैत भी अद्वैत भावना से निवृत हो जाता है।

जिस कार्य के करने का अवसर प्राप्त हो उसी का सम्पादन करने से उसकी शोभा होती है। अप्राप्तकाल के कार्य में नहीं।

शास्त्रज्ञों का कहना है मन का इच्छा रहित हो जाना ही समाधि है।

मेरू पर्वत के समान परम उन्नत, विद्वान, शूरवीर, सुस्थिर और श्रेष्ठ मनुष्य को भी यह एकमात्र तृष्णा ही पलभर में याचक बना कर तिनके के समान हल्का कर देती है।

विचारशील गई वस्तु की उपेक्षा कर देता है। कुत्सित कार्य विचार हीनता से होते हैं।

पुरूष कार्य तो कुछ और ही करता है और उसे उस कार्य का ल अन्य ही मिलता है। आत्म ज्ञान के अनन्तर इस काल्पनिक जगत को अनासक्ति और निष्काम भाव से वहन करना ही श्रेष्ठकर है।

जो मनुष्य मूर्खतावश वर्तमान क्रियाओं द्वारा आगामी काल का शोधान नहीं कर लेता वह दुख का भागी होता है।

KISSAN

सर्दी की रात।

बाहर हल्की बूंदाबादी हो रही थी।

बादल गरज रहे थे।

बिजली आंख मिचौनी का खेल खेल रही थी।

बड़ी बहू को बुखार था।

नई नई शादी हुई थी।

पूरा परिवार उसके इर्द गिर्द मंडरा रहा था।

किसान अलमारी में से दवा निकाल कर लाया और बोला 'बहू को दवा दे दो, आराम आ जायेगा।'

इतना कह कर अपनी बैठक में आ गया।

अभी कुछ क्षण बीते ही थे कि बड़ा बेटा शेखर गुस्से से तमतमाता हुआ बैठक में दाखिल हुआ और कड़कता हुआ बोला 'क्या हो रहा है?'
'बड़ी बहू का बुखार है।' किसान उसकी बात का उत्तर देते हुए बोला।

'मैं तुम सब लोगों के चलत्तर जानता हूँ।' अपनी जोशीली आवाज में शेखर बोला।

'बेटे क्या बात है? आखिर तुम क्या चाहते हो? अभी अभी तुम्हारी शादी हुई है। ऐसा तुम्हें किसी ने क्या भर दिया है?' हताशा भरे स्वर में बूढ़ा किसान बोला।

अभी बात चल रही थी कि प्रसन्नचित्त से छोटा भाई अजीब आया और बोला- 'भाभी जी का कमरा सजा दिया है।

वी.सी.आर. आदि सैट कर अच्छी फिल्म आदि सारी व्यवस्था कर दी है।' कह कर चला गया।

'सब मक्कार है।' -शेखर तपाक से बोला।

'क्या मतलब?' बूढा किसान घूरते हुए शेखर से बोला। '

'तपती देह बुखार में मैं बड़ी बहू को दवा देने के लिये जाता हूँ तो तुम कहते हो क्या चिलत्तर कर रहे हो? छोटा भाई प्रसन्नता पूर्वक तुम्हारा कमरा सजाता है तो कहते हो अच्छी फिल्म नहीं लाया। अन्य झूठी बाते कह कह कर तुम्हारे कान कौन भर रहा है?' हताशा भरे स्वर मे किसान ने कहा।

'हम आप लोगों के पास नहीं रहेंगे। भला भी इसी में है आप हमें

BY CHANDRA PRABHAKAR

जाने दें। परिवार के किसी मेम्बर का हमारे साथ अच्छा सलूक नहीं है। यदि आप हमें नहीं जाने देंगे तो परिवार में जो भी घटना घटेगी उसके जुम्मेदार आप होंगे।' शेखर अपनी बात को बगैर खौफ खाये कहता चला गया।

'तुम अपने उत्तरदायित्व से विमुख हो कर जाना चाहते हो तो रोकूँगा नहीं। नौकरी लग गई है आराम से कमाओ खाओ.

'मेरा क्या उत्तरदायित्व है?' शेखर बीच में ही बोला।

'उत्तरदायित्व तो बहुत है। छोटे भाई बहिन है उनकी शादी करनी है। फिर बड़ा लड़का बाप की बाजू होता है। साथ नहीं रहना चाहते तो बड़ी बड़ी बातें तो न बोलो।' -बूढ़ा किसान बोला।

'मुझे आपकी प्रापर्टी में से कुछ नहीं चाहिये। चाहें सब बेच कर बहिनों की शादी कर देना।' शेखर तपाक से बात का उत्तर देते हुए बोला।

'नई नई शादी हुई है। घर छोड़कर जाने की बात कर रहे हो। आखिर तुम लोग ऐसी हालत में जाओगे कहाँ?' -हताश किसान ने प्रश्न किया।

'हमारे पास सारी व्यवस्था है। मेरे गुरू के पिता दादा जी है वह हमें बहुत प्यार करते हैं, आपसे भी ज्यादा। हम उनके पास रहेंगे। वह अकेले रहते हैं। दादी जी भी बहुत अच्छी है। बड़ा मकान है।
उनका बहुत आग्रह है। वहाँ आनन्द से रहेंगे। सर्विस सैन्टर के नजदीक मकान है। आप चिन्ता न करें। हमें जाने दें।' शेखर सफाई देता हुआ बोला।

'किसान सोचने लगा कि शादी के दो दिन हुए हैं कोई जल मरने की धामकी दे रहा है तथा भद्दे-2 इल्जाम लगा कर जाना चाहते है तो इन्हें रोकना अस
का सहारा बनना चाहिये था वह आँख फेर कर चला जाना चाहता है।

'क्या सोच रहे हो?' शेखर ने घूर कर किसान को कहा। '

'कुछ नहीं यही सोच रहा हूँ, कहाँ तो तुम कहा करते थे एक पीड़ी में प्रेम रहता है पर यह तो एक पीड़ी भी नहीं कट गई।' किसान बोला।

'जाने दो इन बातों को। आपने अभी तक जिन्दगी में किया ही क्या है? हल चलाया है। और क्या है आपकी उपलब्धि? हमें देखना हम कुछ करेगें।' शे
किसान से बोला।

'मुझे तो खुशी होगी तुम कुछ बनो। परिस्थितियों ने एवं मेरे संघर्ष ने मुझे जो बनाया बन गया। ईश्वर करे तुम इस संसार में.....'

'ठहरो ! आप इन बातों को जाने दो और हमारे जाने की व्यवस्था करो।' शेखर बीच में ही बात काट कर बोला।

किसान ने स्थिति को समझते हुए, परिवार कोई दुर्घटना का शिकार न हो जाये, डरते डरते दूसरे दिन किसान अपने बेटे बहू को दादा

जी के घर बोझिल मन से छोड़ आया।

बड़ा बेटा घर छोड़ कर चला गया। छोटा बेटा अजीब उच्छृंखल हरकतों से परिवार को नाकों चने चबाने लगा।

ऐसा नहीं उसमें किसी प्रकार का गन्दा व्यवसन था। शराब, चोरी, जूआ सब बुराइयों से दूर तक रिश्ता नहीं था। परन्तु बड़े भाई के जाने के बाद उसको ऐसा लगने लगा कि सारे परिवार का भरण पोषण मैं करता हूँ। इसीलिये बात बात पर सबसे लड़ता।?

कभी किसान के साथ खेत के काम में हाथ नहीं बटाता अनसन पाटी ले कर घर में बैठ जाता। किसान खेत जोतता रहता, सोचता घर में शान्ति बनी रहे। किसान की इन हरकतों को बेबसी समझता। समय समय पर घर को उत्तेजित करने में नहीं चूकता।

एक दिन अजीब की माँ रोटी बना कर बैठक में बैठी थी। स्मृतियों में खोई हुई थी कि अजीब को आया देखकर बोली- 'बेटा'

'क्या है?' तुनक कर अजीब बोला।'

'मझली लड़की की शादी करनी है।' माँ बोली।

'मैने क्या ठेका ले रखा है? जिसने रेवड़ जामा है वह फिकर करेगा। मै तो यात्रा पर जाऊँगा।' कटाक्ष भरे स्वर में अजीब बोला।

'बेटा तेरे को अभी बुखार है, शरीर ठीक रहे अगले साल यात्रा कर

'बेटे आखिर तुम चाहते क्या हो?' किसान रूआसा सा बोला।

‘चाहना क्या है? आपका बड़ा बेटा नौकरी कर रहा है और ऐश मार रहा है। मेरे हाथ हल चलाते चलाते बूढ़े हो गये। कभी क्रिकेट खेलने नहीं गया। क्रिकेट क्या मैंने तो बाहरी दुनिया ही नहीं देखी। आप.....’

’ठीक है तुमने बाहरी दुनिया भी नही देखी। हल भी नहीं चलाना चाहते। परिवार का ठेका भी नही ले रखा है। तुम अपनी योजना बताओ, मैं तुम्हे जो भी सहयोग होगा दूँगा।’ किसान रूआसे स्वर में बोला।

‘मैं बम्बई जाऊँगा या नौकरी करूँगा। आपने मुझे किसी लायक नहीं छोड़ा। इस परिवार की सेवा करते करते मैं बूढ़ा हो चला हूँ। बड़ा बेटा नौकरी पर लग गया, मजे मार रहा है और मैं मु“त में पिस रहा हूँ। घर की कुछ भी मदद नहीं करता। कहता है मुझको दिया ही क्या है.....’

‘बेटा ठीक ही तो कहता है, मैं क्या दूँगा? मेरे मरने के बाद कुछ हिस्सा मिल जायेगा खेत का तो उसे लगेगा, मैंने कुछ दिया। फिर श्रा) तो कर ही दिया करेगा। और फिर मैंने भी तुम्हें किसी कार्य के लिये नहीं रोका है। तुम मेरे साथ कार्य करते हो खुश हूँ अन्य कार्य करोगे तब भी खुश हूँ। आखिर खानी दो रोटी है।
इतने बैचेन क्यों हो?’ किसान प्रश्न भरी दृष्टि से देखते हुए बोला।

‘मेरा भविष्य सुरक्षित नहीं है।’ क्रोधा से अजीब बोला।’

‘कैसे?’

‘वह नौकरी में पैसे इकट्ठे कर रहा है। उसके ंड इकट्ठे हो रहे है। यहाँ क्या हो रहा है? कभी किसी की शादी, कभी कोई खर्च। मैं कमाता जाऊँ। अ
अजीब उसी प्रकार बोला।

‘बेटा आखिर मैं भी साथ में कमा रहा हूँ। मैं कोई लुंज तो हूँ नहीं जो इतने बड़े बडे शब्द बोल रहे हो। ना ही मैं तुम्हें विवश कर रहा हूँ कि तुम हल चला

‘ठीक है। मैं अपने र्जो को समझता हूँ। मैं निकम्मा नहीं। जब तक सबकी शादी नहीं हो जाती मैं हल चलाऊँगा, फिर आपके पास एक पल भी नहीं रहूँगा
हुआ आक्रोश से भरा हुआ बैठक से बाहर चला गया।

किसान बैठा बैठा सोचने लगा कि इसकी अब शादी की उम्र हो गई है। शादी के बाद इसका स्वभाव ठीक हो जायेगा।

इतनी ही देर में छोटी बेटी आई और बोली ‘बापू क्या कर रहे हो? अभी तक सोये नहीं। क्या चिन्ता कर रहे हो? माँ की तबियत

खराब है आपको बुला रही है।’

किसान ने सुना देखा वह पेट के दर्द से तड़ड़ा रही थी। उसने तुरन्त छोटे बेटे को आवाज दी। नींद में ऊंघता हुआ अजीब आया और अनमने भाव से बोला - ‘क्या बात है?’ तुम्हारी माँ को पेट में दर्द है।’ किसान उदासी से अजीब से बोला।

‘फिर क्या हो गया? सबको सांग करने खूब आते है।’ अजीब व्यंग भरे लहजे में बोला।

किसान इन शब्दों को सुनकर भौचक्का हो गया।

माँ कराहते हुए बोली- 'बेटा जाओ दर्द खुद ठीक हो जायेगा। तू चिन्ता न कर।' फिर कुहारने लगी।

किसान ने पास की अलमारी से कोई पेट दर्द की गोली निकाली और पानी के साथ दी। फिर बेटे से बोला 'जाओ सो जाओ।'

स्वयं पास वाली चारपाई पर सो गया।

अजीब अपनी उच्छृंखल हरकतों एवं बड़बोलेपन से अक्सर घर के वातावरण को अशान्त बना दिया करता था। किसान यही सोचता शादी के बाद सब ठीक हो जायेगा।

कई लड़कियां भी अजीब को दिखाई परन्तु वह सबको द्धरिजैक्टऋ नापसन्द कर देता। एक बार अजीब खुद ही लड़की से बातचीत कर शादी पक्की कर आया। घर आ कर बोला मैं तो बातों में फंस गया। मुश्किल से लड़की के माँ बाप को समझाया तब जाकर किसान की जान छुटी।

अनेक लड़कियाँ देखने के बाद अजीब को एक लड़की पसन्द आ गई। किसान खुश हुआ।

किसान ने अपने खेत के पास बाला बड़ा मकान एक सज्जन को किराये पर दे रक्खा था। उससे यह कह कर कि मेरे छोटे बेटे की शादी हो रही है शादी भी हमारे पास आया करेगा, वह भी रहेगा, अब बहुओं एवं बेटों के लिये बड़े मकान की जरूरत है।' इस प्रकार की अनुनय विनय कर वह मकान खाली व

बड़ा बेटा-बड़ी बहू एक नौकर को साथ ले कर शादी में शरीक होने के लिये आये। आने पर बड़ी बहू ने सास से कहा - 'हमें कोई क्यों याद करे?'

'क्या बात है?' सास बड़ी बहू को घूरती हुई बोली।

'आखिर हम आपके लगते क्या है?' बड़ी बहू अपनी आंखों को घुमाते हुए बोली।

'बात क्या है? क्यों पहेली बुझाए जा रही हो।' सांस बोली।

'कुछ नहीं।' ऐसा कह कर बड़ी बहू खिलखिला कर हँस पड़ी।

सारा वातावरण सहज हो गया।

सांझ रात्रि के अंधाकार में डूब चली थी।

छोटे छोटे बिजली के बल्ब रात्रि के अंधेरे को चीर कर अपना प्रकाश फैला रहे थे। सारा परिवार इकट्ठा बैठा था।

'बापू जी मैं तो अपने लड़के को कान्वैंट में पढ़ाऊँगा।' बड़ा लड़का शेखर शान से बोला।

'बड़ी अच्छी बात है।' किसान ने उत्तर दिया।

'आपने तो हमें कान्वैन्ट में नहीं पढ़ाया। अगर पढ़ाया होता तो क्या मैं दस-बारह हजार रूपये माह की टुच्ची नौकरी करता।' शेखर कटाक्ष करता हुआ बोला।

'मेरे पास जैसे साधान थे, जैसा भाग्य को स्वीकृत था उत्ता पढ़ा दिया। तुम अपने टाबरों को खूब पढ़ाओ। मैने तो खुशी है।' किसान स्काई देते हुए बोला।

'मैं तो पढ़कर भी गंवार रह गया। क्या काम आई पढ़ाई? पढ़ाई भी कर ली रि भी हल जोतो।' अजीब सबकी बात काट कर बीच में ही बोला।

'थम अब छोटी बेटी की शादी की चिन्ता करो। पैसा-ओहदा सब भाग्य से मिलता है।' किसान सबकी तरु देखता हुआ बोला।

'शादी की चिन्ता करो थम। अपना तो नौकरी में भी गुजारा नही चलता। मौज तो अजीब की है यहीं खेत यहीं घर। ऐश मारे सै ऐश।' शेखर ने मुस्कराते हुए कहा।

'तैन्ने ऐश लगै सै। दो हजार रूपये महीने की कोठी में रहवै सै। रंगीन टी.वी. फ्रिज, कूलर और ढेर सारी चीजें लिये बैठा है। ऊपर से कहता है गुजारा नहीं होता। देखो कितना भोला बनता है।' अजीब भी व्यंग बाण छोड़ता हुआ बोला।

'तुझको क्या पता? तू तो घर में बैठा बैठा बात बनाता है। सुबह ड्यूटी पर निकलता हूँ तो हाथ र्क में ठण्डे हो जाते है। स्कूटर चलाता हूँ तो सामने की ठण्डी हवा कलेजे को चीर देती है। तुझे तो पका पकाया बाप का खेत मिल गया खाये जा और गुर्राये जा।' कटाक्ष पर कटाक्ष करता हुआ शेखर बोला।

'अच्छा मेरे को पका पकाया खेत मिल गया। तुझे कहते शर्म नहीं आती। ऐसा पका पकाया खेत लगता है तो आकर बैठ जा। क्यों नौकरी पर जाता है? चौबीस घन्टे खेत पर मेहनत करता हूँ तो रोटी मिलती है। ऊपर से सारे खर्चे, बूढ़ा बाप अकेला क्या कर लेगा? तुझे शरम नहीं आती तू इन्हें छोड़ कर चला गया और दुख सुख की कभी नहीं पूछी।' अजीब उपेक्षा भरे अन्दाज में अपने बड़े भाई शेखर से बोला।

'तू जवान सम्भाल कर बोल। कभी रात की ड्यूटी तो कभी दिन की ड्यूटी। रि किराये के मकान में रहना। तू तो घर के मकान में रह रहा है बातें आ रही हैं। कभी बाहर रहेगा तो पता चल जायेगा।' शेखर खिसयाता हुआ बोला।

'भाई मैं तो सात ुट के छोटे से कमरे में रहता हूँ। ऊपर पानी की टंकी छत पर रखी है। गर्मी में गर्म-सर्दी में ठण्डा। बरसात में मच्छर शरीर का खून पी डाले हैं। भाई तुझे कोठी में रहते बाते आने लगी है।' अजीब उसी शरारत भरे अन्दाज में बोल ही रहा था कि किसान बीच में ही बोल पड़ा।

'आपस में मत लड़ो। जिसने चोंच दी है चुग्गा वही देगा। तुम दोनों भाई कोई चिन्ता मत करो सब कार्य ठीक समय पर सम्पन्न हो जायेंगे।

एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते हुए अजीब की शादी सम्पन्न हो गई।

'बापू मैं पास हो गई।' हर्ष से चहकते हुए छोटी बेटी नीतू बोली।

'आगे क्या विचार है?' किसान ने प्रश्न किया।

'मैं खूब पढ़ाई करूँगी। अंग्रेजी भाषा में एम.ए. करूँगी। मेरा विचार है आप मुझे बड़े भइया के पास छोड़ दो। वहाँ मैं आसानी से एम.ए. की पढ़ाई कर सकूँगी। क्योंकि उनकी अंग्रेजी बहुत प्रखर है।

और आप भी कहीं तीर्थ यात्रा पर घूम आओ।'

'अभी नहीं। तुम्हारी शादी करने के बाद तीर्थ यात्रा पर जाऊँगा।' किसान बोला।

'नहीं बापू नहीं, आप और माँ दोनों तीर्थ यात्रा पर जरूर जाओ। दिन रात हल चलाते रहते हो कभी तो बाहर घूम आओ।'

नीतू जब ज्यादा जिद करने लगी तो किसान ने अपनी पत्नी राबड़ी देवी से विचार विमर्श किया। प्रोग्राम बन गया। छोटी बेटी नीतू को अपने बड़े बेटे शेखर के पास छोड़ कर स्वयं अपनी पत्नी राबड़ी देवी के साथ बद्रीनाथ की यात्रा पर निकल पड़ा।

बस में किसान अपनी पत्नी के साथ बैठा अतीत की स्मृतियों मे खोया हुआ पहाड़ के उतंग शिखरों और घुमावदार पगडण्डी को निहार रहा था। किनारे किनारे गंगा का सनातन संगीत और भी आह्लादकारी दृश्य उपस्थित कर रहा था।

'तुम चुप क्यों हो?' चुप्पी को तोड़ते हुए राबड़ी देवी ने प्रश्न किया।

'कुछ नहीं।'

'देखो आप बच्चों की बात पर ज्यादा सोच विचार मत किया करो। आप एक काम करो अपने बड़े बेटे को एक प्लाट दिलवा दो। मकान बनवा लेगा। बड़ी बहू भी खुश हो जायेगी।' राबड़ी देवी बहुत सोच विचार कर बोली।

'मैं प्लाट दिलवा दूँ।' किसान अचकचा कर बोला।

'हाँ ! क्या बात है?'

'मेरे पास इत्ता रूपया है?'

'मैं अपना जेवर दे दूँगी।'

'जेवर देने के बाद भी क्या प्लाट जितने पैसे इकट्ठे हो जायेंगे? फिर छोटी बेटी की शादी करनी है। इस बात की तो किसी को चिन्ता है नहीं। सब अपने स्वार्थ की बात करते हैं।' किसान अनमने भाव से बोला।

अचानक बस जोशी मठ के पास आ कर रूक गई। यही बस क्या, अनेक बस, जीप, कार वाहन लाइन में खड़े थे। बस में उतरने पर पता चला एक चट्टान के खिसक जाने के कारण रास्ता जाम हो गया है। रास्ता साफ होने में कम से कम चार घन्टे लगेंगे।

किसान अपनी पत्नी के साथ इधार उधार चहल कदमी करने लगा।

KISSAN

मीठी मीठी सरदी पड़ रही थी।

दूर दूर र्क के पहाड़ दिखाई पड़ते थे।

धीरे धीरे सांझ होती जा रही थी।

सब यात्रियों को रात्रि के होने से जंगल में ही डेरा डालने का भय समाया हुआ था।

इधार उधार जंगली जानवरों का गर्जन भी सुनाई पड़ता था।
चार घण्टे के बाद भी रास्ता साफ न हुआ। आखिर वही रात्रि में यात्रियों को डेरा डालना पड़ा।

प्रातः हुई।

सीमा सुरक्षा दल ने सक्रियता पूर्वक कार्य कर रास्ते की चट्टान के मलवे को हटाकर रास्ता साफ कर दिया।

सारे वाहन घर्र घर्र कर स्टार्ट हो कर बद्रीनाथ की तरु बढ़ने लगे।

'बद्री विशाल की जय' लोग अपनी बसों में बैठे बैठे जय जयकार का नारा लगा रहे थे।

हल्की हल्की बूंदाबांदी भी प्रकृति के सौंदर्य को चार चाँद लगा रही थी।

गंगा भी अपने पूर्ण वेग से चट्टानों के ऊपर गिरती पड़ती अपने सनातन संगीत को गाते हुए बढ़ती जा रही थी।

बस बद्रीनाथ पहुँची।

किसान इस देव भूमि पर पहुँच कर अपने को धान्य समझने लगा। वहाँ का शान्त वातावरण-दूर दूर पहाड़ियों पर छोटे छोटे मकान-पहाड़ों के ऊपर जमी ब
मन्दिर- सब बातें किसान को अभिभूत कर रही थी।

किसान अपनी पत्नी के साथ एक पहाड़ी के कन्धो पर सारा सामान

रखवा कर 'काली कमली धार्मशाला' जो कि मन्दिर के पास थी वहाँ पहुँचा। धार्मशाला में कमरा लिया और सामान रक्खा ही था वहाँ के पण्डे चक्कर लगाने लगे तथा नाम पता गोत्र पूछने लगे। एक पण्डे ने बताया कि आपके परिवार का पण्डा मैं हूँ। उसने परिवार के कुछ लोगों के हस्ताक्षर भी दिखाये। बाद में वह कई बार आकर पूछताछ करता कि आपको कोई तकलीफ तो नहीं है। इधार उधार की बात कर आत्मीयता पैदा करने की कोशिश करता।

मन्दिर के पास ही गर्म पानी का झरना था। वहाँ किसान ने अपनी पत्नी राबड़ी देवी के साथ स्नान किया। रि पूजा प्रसाद की थाली लेकर मन्दिर में प्रवेश किया।

लम्बी कतार में खड़े हो कर सब बद्रीनाथ भगवान के दर्शनों की प्रतीक्षा कर रहे थे और किसान की आँखों से झरझर आँसू गिर रहे थे।

BY CHANDRA PRABHAKAR

दर्शन कर मन्दिर से बाहर आने के बाद किसान ने राबड़ी देवी से घूमने के लिये कहा। राबड़ी देवी ने अपने गोड़ो में दर्द के कारण चलने में असमर्थता जताई। और कहा कि मुझे धार्मशाला में छोड़ कर तुम घूम आओ।

किसान राबड़ी देवी को अपने साथ लेकर आसपास की जगह पर गया। फिर बूँदाबांदी शुरू हो गई। किसान राबड़ी देवी को धार्मशाला के कमरे में छोड़ कर अकेला घूमने निकल पड़ा।

सांझ होती जा रही थी। किसान अकेला बढ़ता जा रहा था। जिधार भी रास्ता मिलता उधार बढ़ जाता। जीवन का अतीत-वर्तमान-भविष्य सब खो चुका था डगर बढ़ता जाता था।

कहीं कोई साधू गंगा के किनारे धूनी रमाये बैठा लोगों को उपदेश दे रहा था तो कही लोगों को गंगा किनारे पंडे तर्पण करवा रहे थे। किसान धार्मशाला

रात्रि विश्राम कर दूसरे दिन प्रातः घर के लिये रवाना हो गया।

किसान बद्रीनाथ की यात्रा पूर्ण कर जैसे ही बड़े बेटे शेखर के घर पहुँचा बाहर बरामदे में नीतू कपडे सुखा रही थी।

माँ बापू को देखते ही खुशी से ओतप्रोत हो गई और भाई भाभी को खबर देने के लिये अन्दर भागी।

शेखर, बड़ी बहू, मुन्ना साथ आये।

माँ बाप के पैर छूकर सारा सामान उठा कमरे में आ गये।

किसान बद्रीनाथ यात्रा की बातें सुनाने लगा एवं गंगाजल प्रसाद एवं अन्य छोटी मोटी चीजें यात्रा के दौरान खरीदी थी निकाल निकाल कर रखने लगा।

'बापू मैने एक प्लाट दिला दे।' शेखर सब बातों से धयान हटाते हुए बोला।

'प्लाट वास्ते नोट तो कोनी' किसान बात का उत्तर देते हुए बोला।

वह गांव के खेत के पास जो मकान है उसे बेच क्यों नहीं देते। वहां कौन जायेगा? आपने तो वह मकान यह कह कर खाली करवा लिया बड़ा बेटा आया करेगा सारा परिवार इकट्ठा रहेगा। पर हम वहाँ जाकर करेगे क्या?' शेखर किसान की आंखों में आँख डाल कर बोला।

'क्यों माँ बाप से मिलने आया करो।' छुट्टियों में कभी एक दो महीने माँ बाप के पास गुजार लिया करो।' किसान शेखर की तरु देखते हुए बोला।

'हूँ ! आप सब कुछ समझते हो फिर भी ऐसा कह रहे हो।' गम्भीर बन शेखर बोला।'

'मैं समझा नहीं।' भोला सा चेहरा बना किसान बोला।

आपको पता है अजीब मेरा गांव में आना बिल्कुल पसन्द नहीं करता। उसको डर लगता है मैं खेत की जमीन पर अपना हक हथिया लूंगा.....'

शेखर अभी बोल ही रहा था बीच में ही बड़ी बहू बोल उठी- 'देखो जी हमारे साथ बहुत जुल्म हुआ है। यहाँ किराये के मकान में रहते हैं। कम से कम किराया देने लायक रूपये तो गांव से भेजने चाहिये। खेत का सारा का सारा माल आप लोग हड़प कर जाते हो। हमारा तो रोआ रोआ गाली देता है।' बड़ी बहू ने सबको घूरते हुए कहा।

'इस माल को शेखर ने भी खूब खाया है। पढ़ा-लिखा-शादी-नौकरी सब उसी माल से हुई है। कितना माल है यह शेखर भी जानता है। दिन रात मेहनत कर दो जून रोटी मुश्किल से नसीब होती है। फिर बच्चों की परवरिश-शादी ब्याह के खर्चे अपने अथक परिश्रम से पूर्ण कर रहा हूँ। यही गनीमत समझो मैंने तुमसे कभी कुछ नहीं मांगा। अपना बोझ स्वयं ढो रहा हूँ।' किसान बात का जवाब देते हुए बोला।

'रहने दो इन बातों को। हमारे पास है क्या? हमें दिया ही क्या है जो हमसे मांगते। शादी ब्याह के खर्चे उठाते हो तो हम पर क्या एहसान करते हो। सब ही अपनी औलाद को पालते है। आप क्या कुछ नया कर रहे हो।' बड़ी बहू भी अपनी बात को ऊपर रखते हुए निर्भीकता पूर्वक बोली।

अभी यह बात चल रही थी कि बीच में ही फोन की घन्टी बज उठी।

'हैलो-हैलो?' किसान ने फोन उठा कर पूछा। 'ओह! बापू आप। यात्रा से आ गये।' आवाज को पहचानती हुई मंझली बेटी बोली।

'बेटी ठीक है।' किसान बोला।

'बापू आप बद्रीनाथ की यात्रा पूरी कर कब आये?'

'अभी'

मुझे भइया भेज कर बुला लो। बहुत दिन हो गये आपसे मिले।' मझली बेटी आग्रह पूर्वक बोली।

'ठीक है।' किसान ने उत्तर देकर फोन रख दिया। फिर शेखर की तरु मुंह कर बोला- 'जाओ मझली बेटी को ले आ। एक दो दिन साथ रह लेगी। बहुत दिन हो गये उसे मिले।'

'मैं नहीं जाऊँगा।' शेखर बोला।

'क्यों?'

'आप समझते नहीं। यह नौकरी है नौकरी। घर की हाकिमी नहीं है जब चाहो जहाँ चले जाओ।'

शेखर रुकाई देते हुए बोला।

'मगर कल तो तुम्हारा छुट्टी का दिन है। इसमें हाकिमी क्या करेगी?' किसान भी कुछ तुनककर बोला।

'कह दिया ना! मैं नहीं जाऊँगा। बेटी अपने घर ही अच्छी लगती है। क्या जरूरत है यहाँ आने की। लड़कियों का घर में ज्यादा इन्ट्रेन्स अच्छा नहीं होता।' शेखर अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला।

'बेटा इसमें इन्ट्रेन्स की क्या बात है?' किसान अपनी पत्नी राबड़ी देवी की तरु देखते हुए बोला।

'बेटा चला जाइबो। क्यो इत्ते नखरे करत है.....' राबडी देवी पुचकार कर शेखर से बोली।

'माँ मैं नही जाऊँगा। एक बार कह दिया जो कह दिया।' शेखर निर्भीकता पूर्वक बोला।

सब चुपचाप बैठे एक दूसरे का मुँह देख रहे थे।

'चलो बापू थमनै शहर की हवा खिलाऊँ।' चुप्पी को तोड़ते हुए शेखर बोला।

'चलो' किसान भी उठ खड़ा हुआ।

स्कूटर पर शेखर के साथ शहर की हवा खाने निकल पड़ा।

'यहाँ प्लाटों के दाम अनाप शनाप बढ़ रहे है। जो आप सामने बाला प्लाट देख रहे है पिछले साल पचास हजार में बिक रहा था, अब पाँच लाख देने आते हैं। छै लाख माँग रहा है।' स्कूटर को जरा तेज चलाकर शहर के पार्क-बड़े बड़े गवर्नमेन्ट के भवन-कालोनियाँ बड़े गर्व के साथ शेखर दिखा रहा था। से चलाता हुआ बोला।

'सब भाग्य का खेल है।' किसान अनमने भाव से बोला।

'मेरी तो कोई मानता नही। किसी को किसी पर विश्वास नहीं। सब अविश्वास में जीते है।' शेखर बात को बढ़ाते हुए बोला।

'ठीक बात है।' किसान बात को काटे बगैर हाँ मे हाँ मिलाता हुआ बोला।

'आपको पता है यदि मेरे पास यहाँ प्लाट हो तो मेरा कितना काम बढ़ जाये। जगह जगह किराये के मकानों के जाले झाड़ने पड़ते हैं।' शेखर बेबसी के स्वर में बोला।

'क्या काम बढ़ जाये?' किसान जिज्ञासा पूर्वक बोला।

'मैं कोचिंग सैन्टर चला सकता हूँ। लोगों को अपना ऑफिस बना कर हजारों की ीस ले सकता हूँ। रि प्लाट के बाहर खाली जगह पर पटरी बाले ही हजारों रूपये किराये का देते हैं। परन्तु मेरी कोई बात समझता नहीं। गांव का मकान बेच दो तो क्या हो जायेगा? वहाँ तो किसी को जाना नहीं है।' शेखर अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला।

'बेटे मुझे पहले अपनी छोटी बेटी की शादी करनी है। इन सब बातो की तरु मेरा धयान नहीं है। जब बेटी विवाह योग्य हो जाती है तो प्रथम धयान बाप का बेटी के हाथ पीले कर दूँ इस पर रहता है। तुमको प्लाट दीखता है मुझे लड़की की शादी करनी है इसकी चिन्ता है। खैर अपनी अपनी वासनाएँ।' दो टूक उत्तर किसान ने शेखर को दिया।

'बापू तुमने मुझे बहुत दबाया है।' शेखर शिकायत भरे लहजे में बोला।

'आखिर यह आरोप मुझ पर क्यों लगा रहे हो? सुबह बड़ी बहू भी कह रही थी गाँव के उस मकान को जिसे अजीब की शादी में खाली करवाया था उसका किराया तुम्हें भेजने वास्तें मैंने कहा था।' किसान ने शेखर को प्रश्न भरी दृष्टि से देखते हुए कहा।

'हाँ- आपने कहा था।' शेखर ने वगैर सोचे टाक से उत्तर दिया।

'क्या कहा? तुम भी मुझे झुठला रहे हो। एक बार तुमसे यह बात जरूर हुई थी कि यदि तुम्हे खर्चे में तकलीफ हो तो मकान का किराया तुम्हे भेज दूँ। परन्तु तुमने कहा था ना बापू हम मजे में है। किसी बात की चिन्ता न करे। परन्तु आज तुम मुझे भी झुठला रहे हो।' किसान क्रोधित होता हुआ शान्त स्वर में बोला।

'बापू आपने कहा तो था ही। अब बात को पलटो तो मैं क्या करूँ?' शेखर उसी अन्दाज में व्यंग के साथ बोला।

किसान ने सुना और चुप रह गया। विचार करने लगा जिन बच्चों से कभी कुछ नहीं मांगा। अपनी सामर्थ के अनुसार सब कुछ किया। वही उल्टी सीधी बात कर माँ-बाप को विवश कर रहे है कि उनसे कभी मिलने के लिये भी न आयें।

किसान घर आया और अपनी पत्नी राबड़ी देवी के साथ गांव के लिये रवाना हो गया। छोटी बेटी नीतू को पढ़ाई वास्ते शेखर के पास ही छोड़ गया।

अमावस्या की काली रात थी।

खूब जमकर बारिश हुई थी।

मेंढ़क टर्र टर्र टर्र कर रहे थे।

सरकारी बत्ती गुल थी।

हूमस के मारे जी घुटा जा रहा था।

ऐसे में बाहर दालान में चारपाई पर किसान बैठा पत्नी से बाते कर रहा था। पत्नी बोली - 'आप नीतू को क्यों छोड़ आये? पता नहीं क्या हालचाल होंगे।'

'क्यों क्या बात है? लड़ाई तो वह हमसे करता है। बड़ा भाई बाप बराबर होता है। मुझे पूरा विश्वास है वह बेटी को पढ़ाने में पूरी मदद करेगा। उसने ऊँची पढाई की हुई है। बेटी भी खूब पढ़ना चाहती है उसको भरपूर सहयोग मिलेगा। यही सोंच कर मैं नीतू

को साथ नहीं लाया।' किसान अपनी बात की स्फाई देता हुआ बोला।

इनकी बात चल रही थी बैठक में रखे टेलीफोन की घन्टी जोर जोर से बज उठी।

'हैलो-हैलो कौन?' किसान इस अधियारी रात में टेलीफोन पर व्यग्रंता के साथ बोला।

'मैं -नीतू...'

'बोलो क्या बात है?'

'मुझे बुला लो'

'कारण?' किसान भौचक्का हो बोला।

'भाभी की माँ घर पर आई थी। बोल रही थी इनका यहाँ रखा ही क्या है? जो यहाँ पर भी छाती ठूँकने के लिए चले आते है। मुझे यहाँ पढाने में कोई रू
छोड़ कर इधार उधार चले जाते हैं। ताने देते है। किसी समय रोटी नहीं खाऊँ तो कहते है भूखी नहीं मर जायेगी। बापू ज्यादा मै कुछ नहीं कहती। मेरे प
आ कर फोन किया है। आप मुझे बुला लो।' रोते रोते नीतू ने टेलीफोन पर अपनी व्यथा सुनाई। '

'ठीक है बेटी। मैं अजीब को जल्दी ही तुम्हें लेने के लिये भेजूँगा।

तुम किसी बात की चिन्ता मत करना।' ऐसा आश्वासन देकर
किसान ने टेलीफोन रख दिया।

प्रात: होने पर नीतू को बुलाने के लिये अजीब से बोला।

'बापू भारी वर्षा के कारण एवं नदी में बाढ़ आने के कारण रेल
की पटरी उखड़ गई हैं। दो चार दिन में आवागमन ठीक हो
जायेगा, उसके बाद नीतू को ले आयेगे।'

अजीब बात कर ही रहा था टेलीफोन की घण्टी बज उठी।

'हैलो - कौन?' किसान ने टेलीफोन उठा कर पूछा।

'मैं बड़ी बहू बोल रही हूँ।'

'बोलो।' किसान बोला।

'आप नीतू को बुला लो। उसने हमारी नाक में दम कर रखा है।
उसकी दो महीने सेवा कर दी बहुत है। आप बुला लो।' बड़ी बहू
ने जोर देकर कहा।

'ठीक है मै शीघ्र ही बुला लूँगा। भारी वर्षा और नदी में बाढ़ आ
जाने के कारण रेल की पटरियां उखड़ गई हैं। दो चार दिन में
ठीक होते ही मैं अजीब को भेज दूँगा।' किसान बोला।

'इतने तो हम मर ही जायेंगे। आप जल्दी बुला लो।' कह कर
बड़ी बहू ने टेलीफोन रख दिया।

किसान ने अजीब को नीतू लाने के लिये तुरन्त भेज दिया।

हाँलाकि उसे लम्बे रास्ते से जाने में चौगुणा टाइम लगा। भारी बरसात के कारण रास्ते बन्द थे।

'मैने' सारे घर का भार उठा रखा है फिर भी कोई यश नहीं देता।' अजीब ने चिहुँकते हुए नीतू को साथ लिये घर में प्रवेश किया।

'भार उठाने वाले कहा नहीं करते । नींव का पत्थर चुपचाप कभी नहीं बोलता। सच तो यह है प्रेम में भार की प्रतीति नहीं होती। बच्चे की परवरिस करने वाली दाई अपने काम गिना सकती है कि इस समय दूधा पिलाया-नहलाया- खिलाया-सुलाया आदि आदि अनेक छोटे बड़े काम गिना सकती है। परन्तु माँ कहती है मै कुछ नहीं कर पाती....'

'रहने दो इन उपदेश की बातों को। इन उपदेशों को सुनकर कोई क्या करेगा।' अजीब बीच में ही बोला।'

'जीने का एक ढंग मिलेगा।' किसान अपनी बात को पूरी करते हुए बोला।

'तभी तो आपने अपने बड़े बेटे को घर से बाहर निकाल दिया।' अजीब ढीठता से बोला।

किसान चुपचाप अजीब की तरु देखने लगा। बात को आगे बढ़ाते हुए अजीब बोला- 'अब मेरे खर्चे बढ़ गये है तो मुझे भी निकाल देना चाहते हो। मेरे तो करम फूट गये सबका भरनाभरते भरते। मेरे हाथ तो खाली के खाली।

'बेटे मैने आज तक जीवन में किसी भी बच्चे के साथ कोई गलत व्यवहार नहीं किया है। फिर तुम कैसे कहते हो मैं तुम्हें निकाल देना चाहता हूँ।' किसान ने प्रश्न भरी दृष्टि से अजीब को देखा।

'मेरे नाम खेत नहीं है। मकान भी आपके नाम है। सब चीज के आप मालिक हैं जब चाहो तब धाक्के मार सकते हो। वह तो नौकरी में ऐश कर रहा है, मेरा क्या? मैं सारे परिवार का करता करता बूढ़ा होने जा रहा हूँ फिर भी कोई धयान नहीं देता। बड़ा भाई कहता है मैं ऐश कर रहा हूँ। ऐसा क्या जोड़ लिया मैने?' अजीब खिसयाता हुआ बोला।

'बेटा पैसा-भाग्य-ओहदा सब किस्मत के खेल हैं। तुम दो भाई एक जूट रहते बहुत खुशी मिलती सब एक दूसरे पर नुकताचीनी का घिनौना खेल खेल रहे हैं। खेत- मकान मेरे नाम है। आगे जो बनाओ अपने नाम बना लेना। फिर झगड़ा किस बात का है। बड़ा भाई भी अच्छी नौकरी पर लगा हुआ है वह अपना कार्य किये जायेगा। तुम अपना खेत जोते जाओ।' किसान ने कहा।

'खेत तो जोतता रहूँ। पर उसको तो मैं फूटी आंख नहीं सुहाता। उसको तो ऐसा लगता है खेत अपने आप फसल देती है।' अजीब रूआसे स्वर में किसान से बोला।'देखो मैंने गलत किसी बच्चे के साथ नहीं किया है। नीतू के लिये लड़का देख रक्खा है। शीघ्र ही उसकी शादी कर देंगे। खेत तुम जोता करना। वह अच्छी सर्विस पर लगा ही हुआ है। मैं भी अभी तुम्हारे साथ हल चला रहा हूँ। बाकी अब मैं थक गया हूँ। हल चलाने का मन भी नहीं रह गया है। शीघ्र ही सारी व्यवस्था करूँगा।' ऐसा कह कर किसान ने बात को समाप्त किया।

'मुझे उम्मीद नहीं थी आप बेटे के साथ इतनी बड़ी गद्दारी करेंगे।' शेखर क्रोधा में भर किसान से बोला

'आपने खेत अजीब को दे दिया और खाली एक मकान मुझको हिस्से में दिया। कितने बड़े अन्यायी है आप।

पुनः रूककर शेखर फ़िर बोला- 'ऐसे क्या आप दानवीर कर्ण है। मुझे आपका कुछ नहीं चाहिये। मुझे आपने मेरी जन्म भूमि से वंचित कर दिया। मुझे नहीं पता था आप इतने बड़े धोखेबाज हो।' शेखर अपनी धुन में बोले जा रहा था और किसान चुपचाप सुनता जा रहा था।

किसान ने सोचा तो यह था नीतू की शादी हो चुकी है। सब कमा रहे है। इनको अपना अपना हिसाब बता दें। अजीब भी अभी तक परिवार के साथ काम करते करते अपने लिये कुछ भी नहीं बनापाया है। सोच कर किसान ने कहा - 'देखो एक न्योरा पड़ा है। उसमें मैं अपने जीवन की सांधयबेला आश्रम बनाकर गुजारना चाहता हूँ। खेत अजीब ले लेगा। शेखर अच्छी नौकरी पर लगा हुआ है वह मकान ले लेगा। बस इस बात पर सब भड़क रहे थे।'

'सांधयबेला तो अब हमारी बनेगी।' अब इनका आश्रम बनवा कर दो।' अजीब भड़कता हुआ बोला।

'हम तो गांव में आकर ही बस जाते है। हमारे ऊपर कर्ज है वह सब सामान बेच कर पूरा कर आयेंगे। फ़िर यहाँ खेत में आ कर हल चलायेंगे। हल चलाने में जो मजा है वह नौकरी में कहाँ? गिनती के टके मिलते है उस पर कभी दिन में जाओ। कभी रात में जाओ। दिल धाक धाक करता रहता है। स्कूटर पर जाते है, कई बार बचे है। यह भी कोई जीने में जीना है।' बड़ी बहू रूआसी सी हो कर बोली।

किसान चुपचाप सबकी सुनता रहा और फ़िर खेत में हल जोतने के लिये निकलने लगा। उसी समय अजीब जरा तेजी से बोला- 'हमने आपकी वासनाओं को पूरा करने का ठेका नहीं लिया हुआ है। कभी आश्रम बनवाओ....'

'क्या मैने ही सारा ठेका लिया हुआ है?' किसान बोला।

औलाद पैदा की है तो ठेका और कौन लेगा। देखना मैं....'देखो बेटे मुझमें जितनी बुि) थी उतना कर दिया। पढ़े लिखे हो, काम कर रहे हो किये जाओ।' किसान सफ़ाई देता हुआ बोला।

'हमारा क्या है?' सबके हिस्से नाम कर दो।' अजीब तर्क देता हुआ बोला।

'मैं कहाँ जाऊँ?' किसान सबकी आँखों में आंख डालकर बोला।

'तुम्हें दो जून रोटी ही तो खानी है। कही खा लेना। क्या हमारे ऊपर विश्वास नहीं है?' अजीब ने प्रश्न किया।

'बेटा विश्वास तो पूरा है। इसीलिए आज तक मैं पूर्ण विश्वास के साथ इस परिवार के साथ जी रहा हूँ। परन्तु इतने बड़े बड़े बोल क्यों बोल रहे हो? प्रापर्टी-खेत यह सब मेरे मरने के बाद तुम्हे स्वयं मिल जायेंगे। जीते जी मुझसे क्यों छीन लेना चाहते हो? क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है।' किसान ने पूछा।

'मुझे तो कुछ नहीं चाहिये।' शेखर बीच में बात काट कर बोला।

'नहीं सबको सब कुछ चाहिये। जीवन कफ़ी पड़ा है मैने श्रम की पूजा की है। तुम भी श्रम को पूजो। जिस नदी में वेग होता है वह अपने रास्ते खोज लेती है।' किसान ने कहा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना खेत की ओर बढ़ चला।झोपड़ी में बूढ़ा किसान लेटे लेटे दीपक की लौ को देख रहा था। इधार से उधार करवटें बदल रहा था। पूरी रात बैचेनी से गुजरती रही।

प्रातः चिड़िया चहचहाने लगी।

दूधा बाले ने आवाज लगाई।

'दादा दूधा ले जाओ।'

'आया भाई'

किसान ने झोपड़ी के अन्दर से दूधा वाले की आवाज का उत्तर दिया। दूधा के लिये बर्तन लेकर दूधिये के पास आया।

'दादा आपकी आँख लाल बहुत हो रही है, क्या बात है? सोये नहीं!' दूधिये ने जिज्ञासा दिखाते हुए बूढ़े किसान से प्रश्न किया।

'नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।' किसान ने रूखेपन से उत्तर दिया और धारती की तरु देखने लगा।

'अच्छा दादा यह बताओ कि आपके बड़े लड़के शेखर का कोई समाचार आया है?' दूधिये ने कुरेदते हुए किसान से प्रश्न किया।

'भाई उसको तो मैने घर से निकाल दिया था फिर भला क्यों उसका समाचार आयेगा?' दूधिये की तरु देखते हुए किसान ने कहा।

'दादा क्यों मज़ाक करते हो? आप घर से निकालोगे? मैं सदाआपकी आँखों में उसके लिये बड़े बड़े सुपने देखा करता था। फिर... '

'अरे छोड़ो इन बातों को! वह तो कहते है बूढ़ा बहुत चालाक है। किसी की बातों को ऊपर नहीं आने देता?' बूढ़े किसान ने हँसते हुए कहा।

'दादा मैं सब समझता हूँ। यह क्यों नहीं कहते लड़का पढ़ लिख गया, नौकरी लग गई, शादी हो गई और वह अपनी डगर पर चला गया। फिर लौट कर कभी नहीं देखा कि छोटे भाई बहिन या आप किस हालात में है?' दूधिया बात काट कर बोला।

'नहीं-नहीं- ऐसी बात नहीं है। यह संसार चक्र बड़ा अजीब है। सबकी अपनी अपनी समस्याएँ हैं। मुझे अपने बेटे बेटियो की शादी की चिन्ता थी तो उसे अपना घर बसाने की। इसमे गलत क्या है?' किसान ने एकटक दूधिये की तरु देखते हुए कहा।

'दादा गलत तो यह है कि वह यह कहता है कि मुझे घर से निकाल दिया और कुछ भी नहीं दिया।' दादा की बात का उत्तर देते हुए दूधिया बोला।

'वह भी ठीक कह रहा है, परन्तु मेरी यह समझ में नहीं आ रहा कि उसको क्या देता जिससे वह सदैव खुश रहता। सोंचता था नौकरी लग गई है गुजारा हो जायेगा। फिर उसने कुछ मांगा भी नहीं।छोटी मोटी चीजों के लिये इन्कार भी नहीं किया।' किसान सफाई देता हुआ बोला।

'दादा वह यह भी तो कहता है कि मेरी पत्नी को तपते बुखार में सब घर के मेम्बरों ने लड़कर निकाल दिया।' दूधिया ने मुस्काते हुए कहा।

'बेटा जिसको जाना है.....' अभी किसान बोल ही रहा था कि छोटा लड़का अजीब आया और बोला-

'माँ की तबियत खराब है, उसे दिखाई भी नहीं दे रहा। जल्दी चलो।'

किसान सारी वार्ता छोड़ अजीब के पीछे चल पड़ा। किसान ने देखा पत्नी राबड़ी देवी अपने दोनों हाथों से अपने सिर को जोर जोर से पीट रही है। किसान घबरा गया और तुरन्त हस्पताल ले जाकर भर्ती करवा दिया।

हस्पताल में सुधाार होने पर राबड़ी देवी किसान से बोली- 'इतना रुपया लग रहा है। इसका क्या इन्तजाम किया?'

'छोटी बेटी नीतू से बीस हजार रुपये उधाार लिये है। दे देंगे।' किसान ने गम्भीर बन उत्तर दिया।

'मेरी मानो तो कहूँ !' राबड़ी देवी किसान की तरु देखती हुई बोली।हाँ बोलो !' किसान बोला।

'अपने बड़े बेटे शेखर से मंगवा लो। आज के दिन उसके पास कार कोठी सब कुछ उसके पास है। वह मेरे को देखने के लिये भी आयेगा। आप चिन्ता क्यों करते हो?' राबड़ी देवी किसान को सान्त्वना देती हुई बोली।

'मैंने एक बार उससे कहा था कि मेरी अजीब के साथ नहीं बनती है, मैं अलग काम करूँगा। मुझे कुछ खर्चा भेज दिया कर..... '

'रि.....।' राबडी देवी बीच में बात को काटते हुए बोली।

'बोला बन्धाानी मेरे से नहीं बांधाी जाती। दस बीस हजार इकट्ठा चाहिये तो एक बार ले लो।'

किसान राबड़ी देवी की तरु देखता हुआ बोला।

'रि.....।' राबड़ी देवी पुनः बोली।

'मैने कहा सोंच लेना। मैंने कभी तुमसे कुछ मांगा नहीं है। रि कुछ समय की बात है। मैं अपना काम करने की कोशिश करूँगा ताकि तुम लोगों पर जोर न आये।' किसान अतीत को स्मरण करते हुए राबड़ी देवी से बोला।

'छोड़ो भी बच्चों की बातों को। आप मेरी ोन से बात करवा दो। मैं अपने आप बात कर लूंगी।' राबड़ी देवी सहज भाव से बोली।

'हैलो-हैलो.....''हाँ बोलो!' बड़ा लड़का शेखर बोला।

'मैं तेरी माँ बोल रही हूँ.....'

'बोलो!' शेखर पुनः बोला।

'मैं हस्पताल से बोल रही हूँ। छाती में गांठ है।

डाक्टर ने आपरेशन बोल रक्खा है।' राबड़ी देवी ने ोन पर कहा।

'रि.....' शेखर बोला।

'रुपये एक बार छोटी लड़की नीतू से लिये हैं। क्या तू देगा?' राबडी देवी ने प्रश्न किया।

'हाँ मैं ले आऊँगा। आपरेशन कब का है?' शेखर ने पूछा।

'डाक्टर से पूछ कर सब समाचार दूँगी। बेटे बेटी बहू को मेरा आशीर्वाद।' यह कह कर राबड़ी देवी ने ोन रख दिया।

'माँ कैसी तबियत है?' हस्पताल में माँ के वैड के पास आकर शेखर ने पूछा।

'ठीक है। डाक्टर आज रात को आपरेशन करेगा। तू बहू बच्चों को साथ नहीं लाया।' राबड़ी देवी ने प्रश्न करते हुए शेखर से पूछा।

'उनकी तबियत ठीक नहीं थी।' शेखर ने छोटा सा उत्तर दिया।

रात्रि को राबड़ी देवी की छाती का आपरेशन सफलता पूर्वक हो
गया। दूसरे दिन दुपहर के वक्त राबडी देवी बैड पर पड़ी पड़ी बहुत बैचेन हो कर रो रही थी।

'रो क्यों रही हो?' किसान ने राबड़ी देवी से प्रश्न किया।

'शेखर अपने छोटे भाई अजीब से लड़ कर चला गया।' राबड़ी देवी बात का उत्तर देती हुई बोली।

इतनी देर में अजीब भी वहाँ आ गया।

किसान ने अजीब से पूछा-

'क्या बात है शेखर हम सबसे मिले बिना माँ को इस हालत में छोड़ कर चला गया। किस बात पर झगड़ा हुआ?'

'बापू जिसको जाना होता है वह किसी न किसी को मोहरा तो बना ही लेता है। फोन भाभी जी का आया था जिसमें वह कह रही थी हमारा मन नहीं लग र
हैं। और क्या क्या बात हुई मैं नहीं कह सकता।

तुरन्त जाने का मूढ़ बना लिया।' कुछ रूक कर अजीब पुनः बोला-

'मैने यह भी कहा बापू से और माँ से तो मिल लो। परन्तु गुस्से में कड़कता हुआ बोला तुम सब मक्कार हो। और गुस्से में हस्पताल से बाहर झगड़ा कर चल

किसान सोंचने लगा शायद शेखर के दिल में यह डर बैठ गया होगा कि आपरेशन की फीस आदि का खर्चा न देना पड़ जाये।

जबकि किसान ने एक बार भी हस्पताल में खर्चे के लिये कुछ नहीं कहा।

किसान चाहता था एक दो दिन अपनी माँ के पास रहता। बहुत सकून मिलता। किसान ने शेखर के पास तुरन्त फोन मिलाया
परन्तु शेखर हर बार फोन को काट देता हताश किसान उदास हो गया।

राबड़ी देवी बैड पर दर्द होने के कारण कराह रही थी। छोटा बेटा अजीब अपनी माँ से बोला- 'मैंने बड़े भइया को कुछ नहीं
कहा। मुझे मोहरा बना कर चले गये हैं। खैर माँ चिन्ता न करो, रुपयों का इन्तजाम मैं करूँगा। किसान दोनों भाइयों की
लड़ाइयों से बड़ा दुखी था। चाहता था दोनों प्रेम से रहे।

रात भर किसान को नींद नहीं आई।

करवटें बदलता रहा।

सुवेरा हुआ।

किसान ने टेलीफ़ोन पर शेखर से बात करने की ठानी।

हैलो हैलो.....

कट

हैलो हैलो.....कट

हैलो हैलो.....' किसान बोला।

'हाँ बोलो' तीसरी बार में टेलीफ़ोन पर बड़ी बहू बोली।

'मेरी शेखर से बात करवाओ।' किसान भर्राये स्वर में बड़ी बहू से बोला।

'वह आपसे बात नहीं करेंगे।' बड़ी अक्खड़ अन्दाज में बोली।

'मैं कह रहा हूँ ना, बात करवाओ।' किसान अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला।

'कहा ना, आपसे वह बात नहीं करना चाहते।' बड़ी बहू बात को दुहराते हुए पुनः बोली।

'बात तो मैं करके रहूँगा, चाहे चल कर ही क्यो न मुझे आना पड़े। अच्छा है मेरी बात करवा दो।' किसान ने रूंधो गले से बड़ी बहू से विनती की।

कुछ देर सोच कर बड़ी बहू ने वह टेलीफ़ोन शेखर को दिया।

'बोल क्या बात है?' उपेक्षा भरे लहजे में शेखर बोला।

'तू मुझसे एवं माँ से वगैर मिले क्यों चला गया। बड़ी बहू तेरे पास खड़ी हो कर यह क्यों कह रही है कि तू बात नहीं करना चाहता। बैड पर इस प्रकार छोड़ नहीं जाना चाहिये था' किसान कह रहा था कि शेखर गरज कर बोला- 'इतना चीख क्यों रहा है?''तुझे चीख लग रही है। मैं रात भर सोया नही। तू बड़ी बहू के पास खड़ा हो कर यह कहलवाता है बात नहीं करना चाहता। ऐसा मैंने तुझसे क्या मांग लिया। माँ रो रही है। खैर! तू बात नहीं करना चाहता तो इस समय मेरा जी भरा हुआ है अतः टेलीफ़ोन रख रहा हूँ। फ़िर बात करूँगा। ' यह कह कर किसान ने टेलीफ़ोन रख दिया।

टेलीफ़ोन रखने के बाद किसान सोचने लगा कि ऐसी भी क्या सिखावन हुई जो परिवार से पूरी तरह नाता तोड़ लेना चाहता है।

अपनी बैठक में बैठा बैठा किसान विचार कर रहा था।

पुरानी स्मृतियां दिमाग में तैरने लगी।

अजीब के साथ किसान की कहासुनी होती रहती थी।

किसान ने सोचा खेत के पास बाला मकान जो खाली पड़ा है उसमें रहने लग जाऊँ। उन्हीं दिनों बड़े लड़के शेखर का अपने परिवार के साथ आना हुआ। किसान ने बड़े प्रेम से शेखर से कहा-

'अब इसमें कली रंग रोगन सब करवा दिया है। इसमें अब तुम भी आ कर रहा करो।

'आप समझते नहीं ! मेरी पत्नी आधुनिक विचारो की है। वह साथमें रहना पसन्द नहीं करती।' शेखर बात का उत्तर देते हुए बोला।

किसान सुनकर भौचक्का हो गया और फिर बोला- 'तुम इस मकान में अपने बच्चों के साथ रह लो। मैं अपने पुराने ठिकाने पर ही रह लूँगा। शाम के समय तुम्हारे लड़के और अजीब के लड़के को साथ साथ पास के खेतों में घुमा लाया करूँगा। वह भी दादा के साथ खेल घूम कर बहुत खुश होंगे। जब तक यहाँ रहोगे बहुत आनन्द आयेगा।'

'आप तो बेकार की बातें करते हैं, इसको बिगाड़ दो।' बिना कुछ सोचे समझे शेखर ने उत्तर दिया।

किसान ने सुना और उदास हो गया। जिस शेखर के लिये दीप बन कर सदैव इसका मार्ग प्रशस्त करता रहा वह शेखर इतनी निम्नस्तर की बात करेगा तथा इतनी घटिया सोच रखेगा कि बच्चों का दादा के प्रति प्रेम नहीं बढ़े, सुनकर दंग रह गया।

किसान को पिछली बातें याद आती जा रही थी जब एक बार शेखर के घर मिलने गया तो वहाँ बड़े गौरव के साथ अपने सास सुसर को कह रहा था कि आपकी लड़की तो आपके यहाँ लड़का बन कर आई है। इसी बात को सोचते हुए किसान मन में विचार करने लगा।सच ही तो कह रहा था। मेरे यहाँ तो शेखर लड़की बन कर ही तो आया है। शादी होते ही चला गया। लड़की तो पराया धान होती है। कितना ही पढ़ा लिखा दो, काम करवा दो। घर से विदा लेने के बाद अपने माँ बाप का इतना ख्याल कहाँ रख पाती है? फिर भी लड़की माँ बाप के सुख दुख को तो पूछ लेती है। परन्तु इसको क्या हो गया जो यह परिवार से बिल्कुल नाता तोड़ लेना चाहता है। अपने सास सुसर की इज्जत करे। मैंने सदैव कहा वह भी तुम्हारे माँ-बाप है। परन्तु हमसे इतना सौतेला व्यवहार क्यो? सोचते सोंचते किसान की आंखो में आंसू आ गये।

किसान अपनी बीती यादों में खोया हुआ सोंच रहा था कि कहाँ तो शेखर कहा करता था कि एक पीड़ी में तो खूब प्रेम रहता है परन्तु यह तो एक पीड़ी भी फट गई। सब खूंटे तुड़ा कर भाग रहे है।

इतनी ही देर में अजीब आ धामका और कड़े तेवर से बोला 'बापू मैं आपके साथ काम नहीं करूँगा। ना ही खेत में हल चलाऊँगा।'

'क्यों ?' किसान ने पूछा।

'आप किसी की सुनते ही नहीं। मैं पढ़ा लिखा हूँ। अपने बड़े भाई के लिये मैंने अपना सारा कैरियर दांव पर रख दिया। उसने तो यह सोंचा नहीं, मुझे मोहरा बना कर सदैव अपना उल्लू सीधा

करता रहा।' अजीब आक्रोश से बोला।

'कैसे?' किसान ने सहज भाव से पूछा।

'मैंने उसके लिये अपनी सी.ए. की पढ़ाई छोड़ी। सोंचा था हम दो भाई है बड़ा भाई सरकारी नौकरी पर लग गया है। बापू अकेला क्या भाड़ झोकेगा। बहिने है, घर का खर्च चलाना है, यह सोंच कर मैने सी.ए. की पढ़ाई छोड़ दी और आपके साथ खेत में हल चलाता रहा।

'हूँ' किसान ने हुंकारा लिया।

'उसको तो शरम नहीं आई। शादी के तुरन्त बाद बीबी को लेकर चला गया और ऊपर से इल्जाम लगाता है मुझे घर से बाहर निकाल दिया।'

'बेटे क्या चाहते हो?' किसान ने पूछा।

'चाहना क्या है? आप स्वयं नहीं देखते मुझे पच्चीस साल हो गये आपके साथ हल चलाते चलाते। मुझे क्या मिला? उसकी तरह मैं भी कार कोठी बाला हो पढ़ाई छोड़ कर, आपको अकेला देख कर, घर की जुम्मेदारियों को समझते हुएआपके साथ हल चलाता रहा।'

'मैं भी तो हल चला रहा हूँ।' किसान बीच में बात काटता हुआ बोला।

'ठीक है आप भी हल चलाते रहे हो। परन्तु क्या आप नहीं सोंचते कि मैंने अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया है?' अजीब बूढ़े किसान की ओर आंखों में आँख डालता हुआ बोला।

रि रूक कर कहने लगा- 'आपने वसीयत लिखी वह भी कैन्सिल कर दी। धृतराष्ट्र की तरह आँख पर पटी बांधो हुए सब कुछ जानते हुए भी चुप क्यों बने हुए हो। आपने वसीयत में यही तो लिखा था कि खेत मुझे दे दोगे और घर उसे दे देगें। परन्तु उसने कोहराम मचा दिया।'

'वह परिवार के लिये कुछ नहीं करता। सिखावन में घर के मेम्बरों से सीधो मुँह बात नहीं करता। वह कोठी कार एयर कन्डीसन में घूमता रहे और मैं उसके बर्तन मांजू क्या आप यही चाहते है?' अजीब क्रोधा पूर्वक बोला।

'मैने अपने जीवन का सारा सुनहरा पीरियड आप लोगों एवं बड़े भाई के लिये कुर्बान कर दिया परन्तु एक वह है जो उल्टे इल्जाम लगा कर कहता है कि मैं बाप के माल पर कुण्डली लगाये बैठा हूँ। उसको तो तब सन्तोष होता जब सब घर-खेत बेच कर लड़कियों की शादी कर देते। हमारे पास कुछ नहीं होता तो उन्हें बहुत चैन मिलता।' अजीब अपनी धुन में बके चला जा रहा था।

'मैं क्या करूँ?' किसान अजीब की तरु देखते हुए बोला।

'करना क्या है ? जो उचित लगे कर दो। क्या आप चाहेंगे वह कार कोठी में ऐश करता रहे और मैं दर दर का भिखारी बन कर आपके टुकड़ों पर पलता रहूँ।' अजीब उसी अन्दाज में किसान से बोला।

'तुम ऐसे कैसे कह रहे हो टुकड़ो पर पलता रहूँ।' किसान ने अजीब से प्रश्न किया।

'बापू यह टुकड़ो पर ही पलना होता है। मैं आज उसके बराबर का पढ़ लिख कर भी गवांर का गंवार रह गया।'

अजीब बोल ही रहा था कि किसान सब बातों को समझते हुए बोला-

''ठीक है मैं तुम्हारे बड़े भाई शेखर को बुलाता हूँ उसके आने के बाद निर्णय करेंगे कि क्या करना है?'

किसान ने अपने बड़े बेटे शेखर को बुलाया और कहा मैं अपने समस्त उत्तरदायित्व को पूर्ण कर चुका हूँ। अत: सम्पत्ति का बटवारा किस प्रकार होना चाहिये।

'तीन हिस्से कर लो।' शेखर बोला।

'कैसे।' किसान ने पूछा।

'अजीब, आपका और मेरा।'

'ठीक है। सारी सम्पत्ति की वैल्यू क्या है?' किसान ने पूछा।

'पन्द्रह लाख।' सब एक स्वर से बोले।

'ठीक है अजीब मेरे साथ काम नही करना चाहता। उसके हिस्से की पाँच लाख तुम दे दो।' किसान अपने बड़े बेटे, शेखर की तरु देखते हुए बोला।

'मेरी एक शर्त है। उसको मानोगे तो रुपये दूँगा।' शेखर गम्भीरता पूर्वक बोला।

'क्या?' किसान ने पूछा।

'यह सारी सम्पत्ति मेरी पत्नी के नाम कर दो।' शेखर अपनी बात को स्पष्ट करते हुए बोला।

'सारी क्यों? एक खेत जिसमें हम हल चलाते हैं वह तुम्हारी पत्नी के नाम कर देते है।' किसान शेखर की तरु देखता हुआ बोला।

'नहीं सारी सम्पत्ति मेरी पत्नी के नाम करनी पड़ेगी।' शेखर ने बात को स्पष्ट करते हुए कहा। पुन: बोला- 'आपका क्या भरोसा कल को अजीब पाँच लाख लेकर चला जाये। उन रुपयों को बर्बाद कर दे और फिर आपके पास आ जाये तो आप तो फिर उसे गले लगा लेंगे। यदि आप सारी सम्पत्ति मेरी पत्नी के नाम करो तो मैं पाँच लाख रुपये आपको दे सकता हूँ।

फिर पुन: शेखर ने किसान से प्रश्न किया-

'बोलो रख लोगे या नहीं?'

हाँ अवश्य रख लूँगा।' किसान ने शेखर से कहा।

बटवारा न हो सका।

सबके चेहरे पर बैचेनी स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

किसान रात भर पुरानी बातों को सोचता रहा।

एक के बाद एक घटनाएँ उसके स्मृति पटल पर छाती जा रही थी।

एक बार जब बड़ा बेटा शेखर किसान के साथ खेत पर बैठा हुआ था तो उसने किसान से प्रश्न किया-

'क्या मेरे साथ इन्साफ हुआ है?'

'मैंने पूर्णतया तुम्हारे साथ ही नहीं पूरे परिवार के साथ इन्साफ किया है। फिर तुम्हारे तराजू और बाप के तराजू में फर्क होता है।

जैसे दस भेड़ चल रही हो उनमें से एक भेड़ घायल हो जाये तो गडरिया घायल भेड़ को अपने कन्धो पर उठा लेगा। और भेड़े यह नारा देने लगें कि गडरिया बेईमान है, उसने हमारे साथ ज्यादती की है, घायल भेड़ को कन्धो पर उठा लिया, जबकि हम पैदल चल रही हैं, हमें नहीं उठाता, मैं तुमसे ही पूछता हूँ क्या यह भेड़ों का नारा उचित है।'

'फिर पुनः कुछ देर रूककर किसान कहने लगा- 'तुम्हें पढ़ाने में, तुम्हारें आफिस सैट करने में, नौकरी में, शादी में, बताओ मैंने

किस जगह लापरवाही दिखाई। निरन्तर तुम्हें बढ़ने की प्रेरणा देता रहा। जो मेरे सामर्थ में था वह सब कुछ किया। जो पत्र पुष्प थोड़ा बहुत जेवर-कपड़ा-बर्तन आदि थे वह भी सब दिये। फिर तुम कैसे कहते हो मुझे घर से निकाल दिया। मुझे मेरी मातृभूमि से वंचित कर दिया। मुझे कुछ नहीं दिया।'

किसान धाारा प्रवाह बोले जा रहा था- 'तुम्हारी नौकरी लग गई, शादी हो गई, अपना गुजारा खुद करने लगे। तुम भी परिवार की हालत जानते थे। क्या तुम शादी के बाद घर छोड़ते हुए यह नहीं कह कर गये थे सब बेच बाच कर अपने लड़के लड़कियों की शादी कर देना।

फिर मैंने तो कुछ बेचा नहीं। फिर तुम कैसे कहते हो क्या मेरे साथ इन्साफ हुआ?

शायद तुम्हें यह दर्द होता होगा मैं अजीब को खेत देने की सोंच रहा हूँ। बड़ा बेटा बाप के समान होता है और अपने फर्जों का निर्वाह करता है। परन्तु तुम सिखावन में पड़ कर अपने कर्तव्य से बिल्कुल विमुख हो गये।

शायद तुम्हारी सोंच के मुताबिक तुमको यह सही लगे कि गडरिया घायल भेड़ को छोड़कर जो अपने पैरों पर भाग रही है उस भेड़ को कन्धो पर उठावे। बीस साल हो गये। तुम अपने अतीत में झांक कर देखो। तुम अपने लिये कार-कोठी-बंगला सब कुछ बना चुके हो। दूधा में कुल्ले कर रहे हो। एक खेत का टुकड़ा गुजारे के लिये तुम्हारे छोटे भाई को देने की सोंचता हूँ तो तुम्हें गलत लगता है। मातृभूमि से वंचित कर दिया ऐसा बोलते हो। इस मातृभूमि से भगा कर ले जाने बाला कौन है?

बेटे की सम्पत्ति पर माँ-बाप का भी हक होता है। क्या तुम मुझे अपनी सम्पत्ति में से कुछ दोगे? मगर नहीं। कहोगे हमारे ऊपर तो अनाप सनाप कर्ज है। मुश्किल से गुजारा होता है। भुखमरी बाप के आगे दिखाना जरूरी है कि कहीं कुछ सहायता न करनी पड़ जाये।

अजीब को गुजारे के लिये खेत नहीं दूँ तो क्या करूँ?

क्या वह और उसके बच्चे तेरी कोठी में आ कर झाड़ू पोंचा लगाये।

वह इस परिवार के साथ काम करता रहा है। मेरे साथ खेत में हल चलाता रहा है तभी मैं अपनी जुम्मेदारियों को पूर्ण कर पाया नहीं तो खेत-मकान सारे बिक जाते। क्या यही इन्साफ होता? मैं अपनी सम्पत्ति में से खेत छोटे भाई अजीब को देता हूँ तो तुझे खुश होना चाहिये था कि चलो बापू आपने अजीब को भी अपने पैरो पर खड़ा कर दिया। बल्कि उल्टा बोलते हो कुण्डली मारे बैठा है। क्या तू अपनी सम्पत्ति पर कुण्डली नहीं मारे बैठा है। दूसरों पर पत्थर फेंकने से पहले अपनी नक़ाब को पलट कर देखो।

तेरी माँ बीमार रहती है। जब टेलीफोन पर अपनी बीमारी की बात करती है तो उल्टा यह जवाब देता है मेरी पत्नी तेरे से ज्यादा बीमार है। यदि अपनी माँ से नहीं मिलना चाहता तो व्यर्थ की बातें क्यों करता है?

मातृभूमि की बात करने से पहले अपनी माँ की इज्जत करना सीखो। उसको फोन पर तू मर जायेगी तब भी हम नहीं आयेगें कहता हुआ क्या अच्छा लगता है? बीमार है तो सात टुटा आदमी तेरे पास है तो सही। इस प्रकार उपहास उड़ाने में तेरे को क्या आनन्द आता है?'

किसान रूक कर पुनः बोला- ' मैं तुझे सात टुटा आदमी लगता हूँ। क्या बिगाड दिया तेरा? हम मर भी जायेंगे तो क्या अर्थी नहीं उठेगी? जो इतने बड़े बड़े बोल बोल रहा है।

पूरी रात पुरानी स्मृतियों में याद करते और बड़बड़ाते गुजरी। प्रातः हुई और किसान ने शेखर से बात करने के लिये फोन उठाया-

'हैलो...शेखर.....' किसान बोला।

'हाँ !' शेखर ने उत्तर दिया। 'ऐसा है आज के दिन तुम्हारे पास कार-कोठी-पेन्सन-धान्धा सब कुछ है। और पूर्णरूप से अनन्दित हो। तुम्हारे छोटे भाई के पास कुछ नहीं है और वह अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है। अतः मैं अपनी सम्पत्ति में से केवल एक खेत उसके नाम करता हूँ ताकि वह भी अपने पैरों पर खड़ा हो सके। यदि तुम्हें कोई एतराज हो तो एक माह के अन्दर कभी भी आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।' ऐसा कह कर किसान ने टेलीफोन रख दिया।

किसान की सोंच थी बड़े बेटे के पास सब कुछ हो गया है। जबकि छोटा बेटा परिवार के साथ काम करते करते अपने लिये कुछ भी नहीं बना पाया था।

लगभग दो महीना शेखर की प्रतीक्षा करने के बाद किसान ने खेत छोटे अजीब के नाम कर दिया।

सर्दी के दिन थे।

किसान की छोटी बहिन के लड़के की शादी थी।

राबड़ी देवी की तबियत खराब थी। शादी में शरीक नहीं हो सकती थी।

'तुम शादी में नहीं चलोगी तो क्या अच्छा लगेगा?' किसान अपनी पत्नी राबड़ी देवी की तरु देखता हुआ बोला। 'मेरी तबियत ठीक नहीं है। आप सब लोग चले जाओ। फिर पास के गांव में ही तो शादी है। मैं अकेली रह लूँगी, चिन्ता न करें। शादी में शेखर भी तो आयेगा मेरे से मिल लेगा।' इस प्रकार राबड़ी देवी ने समझा कर सबको शादी में भेज दिया। अकेली घर में रह गई।

KISSAN

बैण्ड बाजे बज रहे थे।

आतिसबाजी हो रही थी।

पटाखों और ऱूलझड़ियों से रह रहकर बिजली सी कौंधा जाती थी।

अचानक किसान ने देखा शेखर अपनी बड़ी बहू के साथ शादी में शरीक होने के लिये अपनी नई कार में आया।

कार से उतर कर बड़ी बहू एवं शेखर ने किसान के पैर छूए।

किसान ने आशीर्वाद दिया।

कार की ड्राइविंग शेखर स्वयं कर रहा था। किसान कार में बैठा खिड़की के बाहर देख रहा था।

बारात गन्तव्य स्थान पर पहुँची।

ग्राउण्ड मे खाने पीने का एवं वर-माला आदि का इन्तजाम बड़ी धूम धाम से कर रक्खा था।

किसान अपने बेटे शेखर एवं बड़ी बहू के साथ चल रहा था।
क्योकि किसान चाहता था शेखर बात करे और व्यर्थ में लड़ाई झगडा न मचाये।

हांलाकि परिवार के और मेम्बर भी देख रहे थे। शेखर का किसान के प्रति उपेक्षा पूर्ण व्यवहार था।

जैसे बेटे-बहू स्टाल पर चाट खा रहे थे और किसान खड़ा हुआ उनका मुँह देख रहा था। शिष्टाचार की सीमा इतनी लांघ चुके थे कि उन्होंने एक बार भी
क्या आप भी कुछ खायेंगे?

शीघ्र ही जाने का प्रोग्राम बन गया।

किसान ने शेखर से कहा- 'तुम्हारी माँ को मैं घर पर अकेला छोड़ कर आया हूँ। उसकी तबियत खराब है। वह तुमसे मिलना चाहती है। हमें यहाँ आना त
चिन्ता है।'

'हूँ !' शेखर ने हुंकारा लिया और बड़ी बहू के साथ कार में बैठ कर चला गया। बाद मे पता चला वह वकील से मिलने के लिये आया था ताकि किसान
अपने छोटे बेटे अजीब को खेत नहीं दे सके। एक ही शहर में आकर और किसान के कहने पर भी अपनी माँ से मिलने नहीं गया।

कुछ दिनों बाद देवी के मेले पर शेखर अपनी पत्नी एवं बच्चो के

BY CHANDRA PRABHAKAR

साथ आया।

शेखर का लड़का किसान की बैठक में गया। किसान ने एक कहानी उसे पढ़ने के लिये दी। जो वह शेखर को दिखाने ले जा रहा था।

इतनी ही देर में किसान के कानों में जोर जोर की आवाजें आने लगी।

किसान बैठक में से बाहर निकला तो देखा शेखर और छोटा भाई अजीब आपस में जोर जोर से बोल रहे हैं।

'इसको तो बिना कुछ किये ही खेत मिल गया।' बड़ी बहू अजीब पर आरोप लगाती हुई बोली।

किसान हाथ जोड़ जोड़ कर सबको शान्त करने की कोशिश करने लगा। कुछ देर बाद जब वातावरण शान्त हुआ तो शेखर की माँ राबड़ी देवी बोली-

'बेटा तेरे घर के पास मेरे गुरू जी आये है, उनके दर्शन करवा ला।'

'नहीं हम आपके गुरू जी के पास नहीं जा सकते।' चिहुंकते हुए बड़ी बहू ने कहा।

'क्यों? क्या अड़चन है? कार में तुम जा ही रहे हो। आती समय रेलगाड़ी में मैं ले आऊँगा।' किसान राबड़ी देवी का समर्थन करते हुए बोला।

'कहा न हम नहीं जा सकते...'

किसान सोचने लगा जब यह अपनी कार में नहीं ले जाना चाहते तो क्यों राबड़ी देवी कार में जाने की जिद कर रही है। कोई किसी की सुनने को तैयार नहीं था। कार में शीघ्र ही अपने परिवार के साथ शेखर चला गया।

राबड़ी देवी इस घटनाक्रम से बहुत उदास थी। उसने किसान से कहा मैं शेखर से टेलीफोन पर बात करना चाहती हूँ।

जैसे ही शेखर से टेलीफोन पर वार्ता करनी चाही तो सारे शिष्टाचार को छोड़ कर भद्दी भद्दी गालियाँ देने लगा। मेरे बेटे को क्या कहानी पढ़ा रहा था?

गाली बकते हुए फोन रख दिया।

किसान ने एक कहानी लिखी थी जिसमें शेखर का चरित्र उजागर हो रहा था। सोंचा तो किसान ने यह था कि कहानी पढ़ कर अपना आत्मविश्लेषण कर परिवार में पुनः प्रेम बढ़ाने का प्रयास करेगा। परन्तु जब कोई समझना ही ना चाहे तो कैसे समझायें?

आखिर में किसान को सूझा क्यों न कहानी की फोटोस्टेट भेज दी जाये। जिसे पढ़ कर समझ लेगा। किसान ने कहानी को एवं पत्र शेखर के पास भेज दिया। पत्र में इस प्रकार लिखा- प्रिय शेखर,

कहानी मैं तुम्हें पढ़ाने के लिये ला रहा था। तुम्हारा लड़का सामने आया, उसने पढ़ी।

उसकी प्रति तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। मुझे तुमसे लेने की कुछ भूख नहीं है। इस भ्रम में मत भागो कि मेरे लिये कुछ करना न पड़ जाये।

संसार के सभी पदार्थ बन में बिखरे हुए प्रस्तर खण्डों के समान एक दूसरे से कोई लगाव नही रखते। भावना ही इन्हें एक दूसरे से जोड़ने की श्रृंखला है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामायण में कहा है -

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन देखी वैसी।

तुम मेरे पिछले सम्पूर्ण जीवन के व्यक्तित्व में झांक कर देख सकते हो, परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के लिये शुभ सोंचा है, शुभ किया है। यदि तुम्हारी भावना में तर्क आ गया है तो मुझसे वार्ता कर सकते हो। मैं जान सकूँ मैं कहाँ गलत हूँ?

समय समय पर परिस्थिती अनुसार जो निर्णय लिये तुम भी मेरी जगह होते तो इससे श्रेष्ठ निर्णय नहीं ले सकते थे।

आओ मैं तुम सबको बहुत प्यार करता हूँ। बोलो क्या चाहते हो? -किसान उपरोक्त पत्र लिखकर डाक से भेज दिया।

किसान को आशा थी कहानी पढ़ कर आत्मचिन्तन कर अपनी कमियों को सुधारेगा।

परन्तु अपने अहंकार और दौलत के नशे में चूर टेलीफोन पर भद्दी भद्दी गालियाँ दी और डाक से वापिस पत्र व कहानी भेज दी।

किसान को दुख हुआ एवं गांव में सबसे अलग एक छोटी सी परचून की दुकान कर ली और वहीं रहने लगा।

उसकी पत्नी राबड़ी देवी कभी कभी रोने लगती तो यह पक्तियाँ गा कर सुनाता -

जो हरि चाहे दुख क्यों माने।

शीश झुका आज्ञा को माने।

दो दिन का यह रैन बसेरा।

कल क्या होगा वह ही जाने।

द्धसमाप्तऋ